भारत के युवा अमेरिकी टैरिफ को कैसे चुनौती दे सकते हैं

यूपीएससी प्रासंगिकता

- **सामान्य अध्ययन-2: भारत-अमेरिका व्यापार संबंध, विश्व व्यापार संगठन, प्रवासी कूटनीति।**
- **सामान्य अध्ययन-3: जनसांख्यिकीय लाभांश, अनुसंधान एवं विकास नीति, औद्योगिक विकास।**
- **निबंध: "भारत के युवा आर्थिक लचीलेपन के वाहक।"**

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में अगस्त 2025 में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ऐलान किया कि भारत से आने वाले सामान पर 50% टैक्स और रूस से तेल खरीदने पर 25% जुर्माना लगेगा। यह भारत के लिए बड़ा झटका है क्योंकि चीन पर केवल 30% टैक्स है, जबकि भारत अमेरिका का करीबी दोस्त माना जाता है। इससे भारत के सामने दो सवाल खड़े हुएपहला—, वह अपनी अर्थव्यवस्था को इन अचानक बढ़े टैक्स से कैसे बचाएगा? दूसरा, क्या भारत के नौजवान भविष्य में ऐसी व्यापारिक चुनौतियों का हल बन सकते हैं?

पृष्ठभूमि: टैरिफ क्या हैं और ये क्यों महत्वपूर्ण हैं?

- टैरिफ दरअसल एक तरह का टैक्स है, जो किसी देश में बाहर से आने वाले माल (imported goods) पर लगाया जाता है। जब टैरिफ बढ़ता है तो बाहर से आने वाला सामान महँगा हो जाता है।
- लगभग 20 सालों तक (2024 तक) अमेरिका में टैरिफ बहुत कम (लगभग सिर्फ 2–3%) था। इससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार आसान और संतुलित बना रहा। लेकिन अब भारत से आने वाले सामान पर 50% टैक्स लगा दिया गया है, जिससे भारत के लिए बड़ा संकट खड़ा हो गया है।

उदाहरण

- भारत में बना 10 डॉलर का शर्ट अब अमेरिका में 15 डॉलर में बिकेगा।
- जबकि वियतनाम या बांग्लादेश का वही शर्ट सिर्फ 12 डॉलर में मिल जाएगा।

- इसका मतलब है कि भारतीय सामान अमेरिकी बाज़ार में कमज़ोर और महँगा हो जाएगा, जबकि प्रतिस्पर्धी देशों का सामान सस्ता रहेगा।

भारत के लिए क्यों गंभीर है?

अमेरिका भारत का सबसे बड़ा निर्यात (exports) बाज़ार है। भारत वहाँ से सबसे ज़्यादा पैसा कमाता है। भारत अमेरिका को मुख्य रूप से ये सामान बेचता है:कपड़े और गारमेंट्स, आईटी सेवाएँ, दवाइयाँ, इंजीनियरिंग गुड्स इत्यादि। इनसे भारत को डॉलर मिलते हैं, जिनसे भारत तेल, मशीनरी और दूसरे सामान खरीदता है। अगर निर्यात से आने वाला पैसा कम हो गया तो:

- भारत का **व्यापार घाटा (trade deficit)** बढ़ जाएगा
- और निर्यात से जुड़े उद्योगों में **नौकरियाँ खतरे में** पड़ सकती हैं।

IAS-PCS Institute

टैरिफ़ के खेल में चीन का प्रभाव

भारत की मुश्किलें तब और साफ़ दिखती हैं जब हम इसे चीन से तुलना करते हैं। भारत अभी भी अपनी **प्रतिस्पर्धा** बनाने की कोशिश कर रहा है, जबकि चीन पहले से ही दुनिया के बाज़ारों पर हावी है।

- **चीन का हिस्सा (ग्लोबल मार्केट शेयर):**
  - कपड़े और टेक्सटाइल्स →36.3%
  - मशीनरी और इलेक्ट्रॉनिक्स →24.9%
- **भारत का हिस्सा:**
  - कपड़े और टेक्सटाइल्स →4.4%
  - मशीनरी →0.9%

इससे सबक मिलता है की सिर्फ़ सस्ता मज़दूर या कम वेतन ही काफ़ी नहीं है। चीन ने इन वजहों से अपना दबदबा कायम किया है:

- **बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर** – तेज़ बंदरगाह, रेल नेटवर्क, लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन।
- **विशाल उत्पादन क्षमता** – बहुत बड़े पैमाने पर सस्ता और तेज़ उत्पादन करने की क्षमता।
- **तकनीकी बढ़त** – सेमीकंडक्टर, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रेयर अर्थ मिनरल्स और एडवांस इलेक्ट्रॉनिक्स में महारत।

Result Mitra
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

यही कारन है की भले ही अमेरिका चीन को "रणनीतिक प्रतिद्वंदी" कहता है, लेकिन अमेरिका अभी भी उसके साथ समझौता करता है - क्योंकि अमेरिकी कंपनियाँ चीनी आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भर हैं।

इसके विपरीत, अगर भारत तकनीकी और औद्योगिक सीढ़ी पर आगे बढ़े बिना मुख्य रूप से सस्ते श्रम और कम मूल्य वाले उद्योगों पर निर्भर रहना जारी रखता है, तो उसे हाशिये पर धकेले जाने का खतरा है।

बदलावउत्पादकों से उपभोक्ताओं की ओर :

कई दशकों तक भारत और चीन जैसे विकासशील देशों की तरक्की का राज़ यही था कि वे **सस्ता माल बनाकर पश्चिमी देशों** (अमेरिका, यूरोप) को बेचते रहे। इस मॉडल को **निर्यात-आधारित विकास (export-led growth)** कहते हैं। यह तब तक अच्छा चला, जब तक पश्चिमी देशों में माँग ज़्यादा थी। लेकिन अब हालात बदल रहे हैं:

- पश्चिमी देशों में माँग घट रही है। वहाँ की आबादी बूढ़ी हो रही है और अमीर-ग़रीब के बीच की खाई बढ़ रही है, जिससे लोग कम ख़रीदारी कर रहे हैं।

- अमेरिका और यूरोप अब अपने घरेलू उद्योगों को बचाने के लिए ऊँचे टैरिफ और संरक्षणवाद अपना रहे हैं। इसका मतलब है कि उनके बाज़ार विकासशील देशों के लिए धीरे-धीरे बंद होते जा रहे हैं।

इससे सबक मिलता है की आने वाले समय में भारत जैसी अर्थव्यवस्थाओं को सिर्फ़ पश्चिमी देशों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। भारत का असली विकास अब **घरेलू बाज़ार** को मज़बूत करके और अपने उपभोक्ताओं पर ध्यान देकर ही होगा।

भारत का आगे का रास्ता उपभोक्ता + उत्पादक –

भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह सिर्फ़ **उत्पादक** ही नहीं, बल्कि **मजबूत उपभोक्ता** भी बनाए। यानी भारत के लोग न केवल सामान और सेवाएँ बनाएँ, बल्कि खुद भी ज़्यादा से ज़्यादा ख़रीददारी कर सकें। इसके लिए ज़रूरी है:

- **आमदनी में वृद्धि** – मध्यम वर्ग और कामकाजी वर्ग के हाथ में ज़्यादा पैसा आए ताकि वे अच्छी तरह ख़र्च कर सकें।
- **ज्ञान-आधारित नौकरियाँ** – भारत को आईटी, बायोटेक, सेमीकंडक्टर और ग्रीन टेक्नोलॉजी जैसे नवाचार-आधारित क्षेत्रों पर ध्यान देना होगा।
- **सस्ते मज़दूर पर निर्भरता से बाहर निकलना** – ऐसे रोज़गार मॉडल बनाना जहाँ काम की गरिमा का समर्थन होऔर रोजगार टिकाऊ हो।

अगर भारत अपनी **घरेलू मांग** को मज़बूत कर लेता है, तो वह खुद को वैश्विक हलचलों से बचा पाएगा और "कम मज़दूरी, निर्यात-निर्भर चक्र" की जकड़न से बाहर निकल सकेगा।

भारत की युवा शक्ति असली ढाल –

भारत की सबसे बड़ी ताक़त उसकी **युवा आबादी** है, जो दुनिया में किसी और देश के पास नहीं है।

- दुनिया के हर पाँच युवाओं में से **एक भारतीय** है।
- अभी भारत में लगभग **12 करोड़ छात्र** कॉलेज और स्कूलों में पढ़ रहे हैं — यह संख्या पूरे जापान की आबादी के बराबर है।
- इसके विपरीत, चीन, यूरोप और अमेरिका में आबादी बूढ़ी हो रही है, कामकाजी लोग घट रहे हैं और बुज़ुर्गों पर निर्भरता बढ़ रही है।

JAS PCS Institute
Result Mitra
रिजल्ट का साथी
@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है

- भारत की युवा आबादी उसकी सबसे बड़ी ताक़त है। यही युवा आर्थिक विकास का इंजन बन सकते हैं। जब बड़ी संख्या में लोग काम करेंगे और साथ ही खर्च भी करेंगे, तो घरेलू माँग लगातार बढ़ेगी और अर्थव्यवस्था मज़बूत होगी।
- युवा दिमाग़ नई तकनीकों जैसे एआई, बायोटेक और ग्रीन एनर्जी को जल्दी अपनाते हैं। इसका मतलब है कि भारत नवाचार में भी बड़ी छलांग लगा सकता है। साथ ही, अगर भारत अपने युवाओं को सही शिक्षा और कौशल देगा, तो वह दुनिया का "टैलेंट कैपिटल" बन सकता है, यानी हर उद्योग को कुशल कर्मचारी भारत से मिल सकते हैं।

मुख्य चुनौती

- हालाँकि यह भी ध्यान में रखना होगा की कि जनसांख्यिकी लाभ (डेमोग्राफ़िक डिविडेंड) अपने आप नहीं मिलता। अगर युवाओं को सही शिक्षा, कौशल और अच्छी नौकरियाँ नहीं मिलीं, तो यही आबादी बोझ भीबन सकती है। यानि की भारत की असली ढाल उसकी युवा शक्ति है। अगर इन्हें सही दिशा मिली, तो भारत न सिर्फ़ अपनी अर्थव्यवस्था मज़बूत करेगा, बल्कि दुनिया के बदलते हालात जैसे **बुज़ुर्ग होती आबादी, संरक्षणवाद (protectionism), और पश्चिमी देशों की घटती माँग** से भी बच पाएगा।

विदेशों में भारतीय प्रतिभा का प्रमाण

भारत की **युवा क्षमता** पहले ही दुनिया को साबित हो चुकी है, खासकर भारतीय प्रवासियों (diaspora) की सफलता से। 1970 के दशक से ही बड़ी संख्या में IIT, स्नातक अमेरिका गए, क्योंकि वहाँ उन्हें बेहतर अवसर मिले। आँकड़े बताते हैं कि भारत से बाहर जाने वालों की संख्या लगातार बढ़ी:

- 1982 में लगभग 3 लाख,
- 2000 तक 13 लाख,
- और 2023 तक यह बढ़कर 32 लाख हो गई।

आज भारतीय केवल 1% अमेरिकी आबादी हैं, लेकिन उनकी मौजूदगी बहुत मज़बूत है, खासकर ऊँचे मूल्य वाले क्षेत्रों में:

- **STEM रिसर्च** – अमेरिकी विश्वविद्यालयों में बहुत बड़ी संख्या में भारतीय मूल के छात्र और शोधकर्ता पीएचडी कर रहे हैं।
- **उद्यमिता** – सिलिकॉन वैली में स्टार्ट-अप फाउंडर्स में भारतीयों की हिस्सेदारी अनुपात से कहीं ज़्यादा है।
- **कॉर्पोरेट नेतृत्व** – गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और एडोबी जैसी दिग्गज कंपनियाँ भारतीय मूल के सीईओ चला रहे हैं।

भारतीय तब सबसे अच्छा प्रदर्शन करते हैं जब उन्हें सही माहौल मिले। अच्छी शिक्षा, नवाचार और अवसरों का मजबूत इकोसिस्टम उपलब्ध हो। भारत के सामने असली चुनौती यही है कि वह **देश के भीतर** एक ऐसा **इकोसिस्टम** बनाए, ताकि युवाओं को विदेश जाने के बजाय यहीं अपनी क्षमता दिखाने का मौका मिले।

@resultmitra www.resultmitra.com 9235313184, 9235440806

भारत के लिए नीतिगत सबक

अगर भारत को अपनी **युवा शक्ति को आर्थिक ताक़त** में बदलना है और अमेरिका के ऊँचे टैरिफ़ का असर झेलना है, तो उसे कुछ ठोस कदम उठाने होंगे।

1. कौशल और शिक्षा में निवेश

- भारत को अपने विश्वविद्यालयों और व्यावसायिक संस्थानों (vocational institutes) को मज़बूत बनाना होगा। खासकर डिजिटल इकॉनमी, ग्रीन जॉब्स, एआई और बायोटेक पर ध्यान देना होगा। जर्मनी के वोकेशनल ट्रेनिंग मॉडल को भारत में अपनाया जा सकता है।

2. अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा

- भारत अपने GDP का सिर्फ़ 0.7% R&D (Research & Development) पर खर्च करता है, जबकि चीन 2.4% खर्च करता है। भारत को प्राइवेट सेक्टर और विश्वविद्यालयों को रिसर्च के लिए प्रोत्साहित करना होगा। ISRO का सस्ता और अभिनव मॉडल बाकी क्षेत्रों के लिए प्रेरणा हो सकता है।

3. घरेलू माँग को मज़बूत करना

- अगर भारत न्यूनतम मज़दूरी बढ़ाए और नौकरियों में सुरक्षा लाए, तो आम लोगों की ख़रीददारी शक्ति बढ़ेगी। साथ ही सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ बढ़ाने से लोग ज़्यादा खर्च करेंगे। जैसे मनरेगा ने ग्रामीण मांग को बढ़ाकर FMCG सेक्टर को बड़ा फ़ायदा पहुँचाया था।

4. निर्यात में विविधता

- भारत को अब सिर्फ़ सस्ते टेक्सटाइल्स और बल्क ड्रग्स पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। इसके बजाय इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिक वाहन, और दवाइयों के नए रूप (Pharma 2.0) जैसे उच्च मूल्य वाले उत्पादों पर ध्यान देना होगा।

5. प्रवासी भारतीय नेटवर्क का लाभ

- भारत अपने प्रवासी भारतीयों का उपयोग कर सकता है। इसमें रिटर्न माइग्रेशन (वापस लौटकर काम करना) और ब्रेन सर्कुलेशन को बढ़ावा देना शामिल है। भारतीय प्रवासी नेटवर्क के ज़रिए वैश्विक शोध सहयोग (global research partnerships) भी मज़बूत किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

- अमेरिका के टैरिफ़ भारत के लिए अभी तो एक बड़ी चुनौती हैं, लेकिन यही चुनौती एक लंबे समय के अवसर का संकेत भी देती है। भारत हमेशा बाहरी बाज़ारों और सस्ते श्रमिक-आधारित निर्यात पर निर्भर नहीं रह सकता। उसका असली भविष्य है — युवाओं को सशक्त बनाना, घरेलू माँग को बढ़ाना और नवाचार (innovation) में निवेश करना।
- अगर भारत अपने **युवा लाभांश** को सही नीतियों से उपयोग करता है, तो वह न केवल टैरिफ़ युद्धों को झेल पाएगा, बल्कि ज्ञान और उपभोग की महाशक्ति बन सकता है। उस स्थिति में, अमेरिका की पाबंदियाँ भारत को अल्पकाल में चोट पहुँचाएँगी, लेकिन दीर्घकाल में नुकसान खुद अमेरिका को होगा, क्योंकि उसने भारत की युवा ताक़त को कम आंका।

यूपीएससी मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न-

प्रश्न : "संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा भारतीय निर्यात पर टैरिफ लगाना एक आवर्ती व्यापार चुनौती रही है। इस संदर्भ में, चर्चा कीजिए कि कैसे भारत के युवा नवाचार, कौशल विकास और उद्यमिता के माध्यम से टैरिफ निर्भरता को कम करने और भारत के वैश्विक व्यापार लचीलेपन को मजबूत करने में योगदान दे सकते हैं।" (250 शब्द, 15 अंक)